ईश्वरप्राप्ति हेतु साधना : खण्ड १

आधुनिक विज्ञानसे श्रेष्ठ अध्यात्म !

(अध्यात्मसम्बन्धी भ्रान्तियोंके समाधानसहित)

(Hindi)

भूमिका

अधिकांश लोगोंको, 'सुख राई समान एवं दुःख पर्वत समान' लगता है। कलियुगमें सामान्य मनुष्यके जीवनमें सुख लगभग २५ प्रतिशत एवं दुःख ७५ प्रतिशत होता है । केवल मनुष्यकी ही नहीं, अपितु अन्य प्राणिमात्रोंकी भागदौड भी अधिकाधिक सुखप्राप्तिके लिए ही होती है । इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति पंचज्ञानेन्द्रिय, मन एवं बुद्धि द्वारा विषयसुख भोगनेका प्रयत्न करता है; परन्तु विषयसुख तात्कालिक एवं निम्न श्रेणीका होता है, तो दूसरी ओर आत्मसुख, अर्थात आनन्द चिरकालीन एवं सर्वोच्च श्रेणीका होता है । अध्यात्म वह शास्त्र है, जो आत्मसुख प्रदान करता है । 'सुखं न विना धर्मात् तस्मात् धर्मपरो भवेत् ।' अर्थात 'खरा सुख (आनन्द) धर्मपरायण हुए बिना नहीं मिलता'; इसीलिए धर्मपरायण होना चाहिए । साधनाद्वारा आत्मसुख प्राप्त करनेसे लौकिक व पारलौकिक सुखका आनुषंगिक फल भी प्राप्त होता है ।

अध्यात्म इतना महत्त्वपूर्ण होते हुए भी खेद है कि अनेक लोग अध्यात्म शब्दके अर्थसे भी अनभिज्ञ रहते हैं । इसीलिए अत्यल्प लोग अध्यात्म जैसे सर्वोच्च आनन्द एवं सर्वज्ञता देनेवाले विषयकी ओर उन्मुख होते दिखाई देते हैं । कोई यदि समझ ले कि 'विषयसुख'की तुलनामें 'आनन्द' अनन्त गुना अधिक आनन्ददायी है, तो वह विषयसुखकी अपेक्षा आनन्दप्राप्तिके लिए ही प्रयत्न करेगा । लोगोंसे ऐसे प्रयत्न हों, इसी उद्देश्यसे यह ग्रन्थ लिखा गया है।

केवल बौद्धिक स्तरपर अध्यात्मको नहीं समझा जा सकता; यह तो प्रत्यक्ष कृत्यद्वारा अनुभूत करनेका विषय है । श्री गुरुचरणोंमें हमारी प्रार्थना है कि इस ग्रन्थको पढकर कुछ लोग साधना आरम्भ करें एवं साधनासे उनमें अन्तर्यामी आनन्द शीघ्र प्रवाहित हो । – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

१. **व्युत्पत्ति एवं अर्थ** १५

२. **समानार्थी शब्द** १६

३. **अध्यात्मका अधिकारी** १६

४. **अध्यात्मके विषयमें भ्रान्तियां** १६

* भय * अज्ञान १६
* अन्धश्रद्धा * दुरुपयोग १९
* धोखाधडी * अति सयानापन २१
* 'हमें क्या लाभ ?' * गोपनीयता २२
* साधनासम्बन्धी भ्रान्तियां २२
  * वृद्धावस्थामें साधना करनेका विचार २२
  * अपने मनानुसार, मनोनीत देवता या सन्तकी साधना करना २३
  * विवाह न करनेका विचार २३
  * व्यवहारमें बाधा उत्पन्न होनेकी आशंका २४
* पुरोहित, कीर्तनकार एवं प्रवचनकारोंसम्बन्धी भ्रान्तियां २४
* साधकोंसम्बन्धी भ्रान्तियां * उन्नत पुरुषोंसम्बन्धी भ्रान्तियां २४
* अध्यात्म सिखानेवालोंसम्बन्धी भ्रान्तियां २६
* गुरुसम्बन्धी भ्रान्तियां २६

५. **अध्यात्मसम्बन्धी भ्रान्तियोंका कारण** २७

* समाजके बडे लोगोंद्वारा भ्रमित किया जाना २७
* प्रचारमाध्यमोंद्वारा अज्ञानका प्रसार २८
* विश्वविद्यालयोंद्वारा ज्ञानप्रसारपर प्रतिबन्ध २८

* विश्वविद्यालयोंद्वारा अज्ञानका प्रसार २९
* सरकारका अप्रत्यक्ष विरोध २९
* बुद्धिवादियोंका अज्ञान एवं अन्धश्रद्धा ३०

६. महत्त्व ३२
* सर्वज्ञता देनेवाला विषय ३४
* जीवके लिए जन्म-मृत्युके चक्रसे छूटनेका अवसर ३४
* सकाम एवं निष्काम साधनामें उपयुक्त ३४

७. मानवकी अध्यात्ममें रुचि क्यों होती है ? ३६

८. अन्य शास्त्र एवं अध्यात्मशास्त्र ३७
८ अ. मनसे सम्बन्धित शास्त्र एवं अध्यात्मशास्त्र ३७
८ आ. अन्य विषय और अध्यात्ममें चिरन्तन सत्यकी मात्रा ४१
८ इ. विज्ञान एवं अध्यात्मशास्त्र ४१
* विज्ञान अध्यात्मकी ही एक शाखा है ४१
* विज्ञानके योग्य विकासके लिए पोषक हिन्दू धर्म ४२
* विज्ञानसे हानि अथवा उसकी मर्यादाएं ४५
* विज्ञानान्तर्गत जिज्ञासा व अध्यात्मांतर्गत श्रद्धा परस्परपूरक ५१
* विज्ञान एवं अध्यात्ममें उत्तम समन्वय आवश्यक ५७
* आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रोंसे सिद्ध हुई अध्यात्मकी श्रेष्ठता ! ५८

९. अध्यात्मके अभ्यासमें बाधाएं ५९
* व्यावहारिक सूचनाओंका अभाव ६२
* विवरणका अभाव * तुलनात्मक अभ्यासका अभाव ६२
* नास्तिकता * निरर्थक बुद्धिवाद ६३

卐 अध्यात्मसम्बन्धी आलोचनाएं / अनुचित विचार और उनका खण्डन ७२